International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 02, No. 01, January - March, 2020, pp.185-189

शिक्षण व्यवसाय में ई–लर्निंग की प्रासंगिकता

अनिल कुमार खण्डेलवाल*
डॉ. सी.पी. पालीवाल**

सार

शिक्षा प्रत्येक समाज या राष्ट्र के निर्माण का प्रमुख साधन है। शिक्षा व्यवस्था से ही उस देश की प्रगति का निर्धारण होता है। शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षक ही शिक्षा के स्तर को निर्धारित करता है। अतः शिक्षक को योग्य, कार्यकुशल आदि गुणों से युक्त होना चाहिए। वर्तमान समय में शिक्षकों का सर्वागीण विकास आवश्यक है। वर्तमान में यह अवधारणा कि शिक्षक जन्मजात होते हैं, में परिवर्तन आया है। अब शिक्षक बनाये भी जा सकते है।

अच्छे शिक्षक बनाने के लिए उनको अच्छा प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक हैं। भारत में शिक्षक शिक्षा का संचालन N.C.T.E. नामक संस्था के द्वारा होता है। वर्तमान युग तकनीकी कुशलता का युग है। इस तकनीकी के विकास व सार्थक प्रयोग के लिए शिक्षा ही एकमात्र उचित विकल्प है। 21वीं सदी में प्राचीन शिक्षण पद्धतियों, गुरूकुल पद्धति आदि का स्थान नवीन पद्धतियों एवं तकनीक ने ले लिया है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में जब तकनीक का प्रयोग किया जाता है तो वह पद्धति ई–लर्निंग कहलाती है। इसे सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में माना जाता है। ई–लर्निंग अनिवार्य रूप से कौशल एंव ज्ञान का कम्प्यूटर एंव नेटवर्क समर्थित अंतः क्रिया है। यदि हम देश को तकनीकी रूप से सुदृढ़ बनाना चाहते है तो इसके लिए शिक्षकों को ई–लर्निंग का ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ई–लर्निंग को आवश्यक किया गया है। आज अध्यापन के व्यवसाय को प्रोद्यौगिकी, वैश्वीकरण जैसे तत्वों ने प्रभावित किया है।वर्तमान समाज में शिक्षण का व्यवसाय सेवा भावी न रहकर पूर्णतः व्यावसायिक हो गया है। इस कारण से भी तकनीक की आवश्यकता अधिक महसूस होने लगी है।

b&yfuix dh iklfxdrk

वर्तमान युग में सम्पूर्ण विश्व एक परिवार के रूप में उभरा है। कोई भी समस्या या खोज का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ता है। वर्तमान समय में कोरोना कोविड–19 के वैश्विक महामारी के दौर में ई–लर्निंग ने अपनी प्रांसगिकता सिद्ध की है। यूनेस्को की रिर्पोट के अनुसार कोरोना वायरस ने लगभग 300 मिलियन छात्रों की शिक्षा में बाधा पहुंचाई है। अकेले भारत में यह संख्या लगभग 80 मिलियन विद्यार्थीयों की है। भारत में 1.6 मिलियन विद्यार्थी 2016 में ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। जो 2021 तक 9.6 मिलियन हो सकते है। भारत में ई–लर्निंग के लिए SWAYAM, E-BASTA, E-PATHSHAALA आदि सरकारी प्रयास एवं XCEED एवं BYJU

G शोधार्थी, राज ऋषि भर्तहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान ।
** शोध निर्देशक, राज ऋषि भर्तहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर एवं प्राचार्य, आर्य महिला बी.एड़. कॉलेज, अलवर, राजस्थान।

जैसे निजी एप भी कार्य कर रहे है। भारत में ई–लर्निंग प्रत्यक्ष शिक्षा का एक प्रभावी विकल्प है। इसमें लाइव स्ट्रीमिंग सुविधा, व्याख्यान को पुनः सुनना, लाईव फीडबैक आदि की सुविधा भी दी जा रही है। ई–लर्निंग शिक्षक व शिक्षार्थियों के मध्य बेहतर तरीके से अतः क्रिया कर नए युग की शिक्षा देने का प्रभावी प्रयास हो सकती है।

मुख्य शब्दः

- **ई–लर्निंग**– ई–लर्निंग को सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह अधिगम अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कम्प्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अधिगम है।
- f'k{kd i.f'k{k.kkFkh– ऐसे प्रशिक्षणार्थी जो शिक्षण व्यवसाय का किसी भी स्वरूप में अध्ययन कर रहे है, वह शिक्षक प्रशिक्षणार्थी माने गये है।
- f'k{k.k 0;olk;– परम्परागत चार व्यवसायों में प्रमुख व्यवसाय एवं शिक्षण पद्धति का वह प्रतिरूप जिसमें शिक्षण कार्य आजीविका प्राप्ति के लिए किया जाता है।
- vkHkklh d{kk,– वे कक्षाएँ जिनमें अध्यापक दूर रहकर भी स्क्रीन के माध्यम से पढ़ाता है। तथा बच्चे अपने प्रश्न भी पूछ सकते है। इसमें ऐसा आभास होता है जैसे अध्यापक सामने ही पढ़ा रहा है।
- vr% fØ;k– साधारण रूप में दो व्यक्तियों के मध्य होने वाली बातचीत। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एवं छात्र के मध्य होने वाला वार्तालाप जो शिक्षण से संबधित हो।

प्रस्तावना

सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि

समाज की उन्नति के लिए उसके नागरिको का सभ्य एवं शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र या समाज की आधारशिला होती है जिस पर राष्ट्र रूपी भव्य महल खड़ा होता है। शिक्षक, शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा का स्तर बहुत कुछ शिक्षक की योग्यता, कार्यकुशलता एवं कार्य क्षमता पर निर्भर होता है। शिक्षा आयोग (1964–66) ने भारत के भाग्य निर्माण का आधार कक्षा–कक्षों को कहा है। क्योंकि शिक्षक ही समस्त शैक्षिक गतिविधियों की धुरी होता है। प्राचीन अवधारणा है कि शिक्षक जन्मजात होते है, किन्तु वर्तमान युग में यह अवधारणा भी विकसित हुई है कि शिक्षक बनाए भी जा सकते है। इस हेतु व्यक्ति को अच्छा प्रशिक्षण देकर शिक्षक के रूप में तैयार किया जाता है। इस प्रशिक्षण के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (N.C.T.E.) की स्थापना की है। जिसने शिक्षण प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के प्रयासों के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं विभिन्न स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण पाठयक्रमों का संगठन एवं संचालन किया है।

वर्तमान समय में तकनीकी के कारण शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व एवं महत्वपूर्ण उपयोगी परिवर्तन आए है। इसी तकनीक में ई–लर्निंग एक ऐसी उपयोगी एवं प्रभावी पद्धति है जो छात्रों को वर्तमान तकनीक से सीखने में सहायता करती है। ई–लर्निंग से शिक्षकों का शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण में भी व्यापक रूप से सकारात्मक परिवर्तन आया है। वर्तमान शिक्षण व्यवसाय में तकनीकी के प्रयोग से शिक्षण प्रणाली अधिक रूचिकर एवं प्रभावी हुई है। सामान्यतः ई–लर्निंग छात्रों एवं विषयवस्तु के मध्य एक प्रभावी मध्यस्थ के रूप में कार्य करती है। जिससे सीखने एवं सिखाने की पद्धति सरल एवं अत्यधिक प्रभावी हुई है।

वर्तमान युग तकनीकी का युग है। अतः शिक्षा भी इस तकनीकी से प्रभावित हुई है। आज परम्परागत शिक्षण पद्धतियों के स्थान पर नवीन शिक्षण पद्धतियों एवं तकनीकों का प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जाने लगा है। अतः शिक्षक को भी इन नवीन पद्धतियों एवं तकनीको का ज्ञान होना आवश्यक है। जिससे वह समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान दे सकें। ऐसी ही एक पद्धति है ई–लर्निंग अर्थात इलैक्ट्रॉनिक अधिगम या ई–अधिगम। ई–लर्निंग को सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया

जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते है और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। ई–लर्निंग अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कम्प्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है।

ई–लर्निंग के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में वेब–आधारित शिक्षा, कम्प्यूटर आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएँ और डिजिटल सहयोग शामिल है। शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को ई–लर्निंग के संसाधनों का ज्ञान होना आवश्यक है। इसी कारण से ई–लर्निंग को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अनिवार्य व आवश्यक रूप से भाामिल किया गया है।

अध्यापन कोई स्थिर व्यवसाय नहीं है। अपितु प्रोद्यौगिकी, सदैव बदलते ज्ञान, वैश्विक अर्थशास्त्र के दबावों और सामाजिक स्थिति से प्रभावित होकर बदलता रहता है। अध्यापकों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2009 (N.C.F.-2009) एक व्यावसायिक कार्यबल का विकास करने के महत्व पर बल देती है। वर्तमान समय में अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर आया है। शिक्षण शिक्षक केन्द्रित न होकर विद्यार्थी केन्द्रित हो गया है। तथा शिक्षण में तकनीक को अधिक स्थान मिलने लगा है।वर्तमान तकनीकी के युग में ई–लर्निंग के बिना शिक्षा अपूर्ण है। तकनीकी के बिना शिक्षण व्यवस्था को प्रभावी नहीं बनाया जा सकता है। दूसरे ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि वर्तमान में शिक्षण प्रक्रिया पूरी तरह से व्यावसायिक हो गयी है। शिक्षा में निजीकरण को बढ़ावा मिला है। निजी विद्यालय ई–लर्निंग एवं तकनीक के प्रयोग पर अधिक बल देते है। इस कारण वे अपने विद्यालय में तकनीकी रूप से सुदृढ़ व्यक्ति को अध्यापक के रूप में रखना चाहते है। जो शिक्षण कार्य के साथ–साथ तकनीकी कार्यो को भी संपादित कर सके।

ई–लर्निंग क्या है?– सामान्य रूप से ई–लर्निंग अध्यापक एंव छात्र के मध्य अन्तः क्रिया के लिए ऑन–लाइन तकनीक का प्रयोग है। इसमें इंटरनेट के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया सम्पन्न होती है। यह अधिगम के उन सभी प्रकारों से संबधित है जो ICT के उपयोग द्वारा सुविधापूर्ण और अनुकूल बनाए गए है। ई–लर्निंग स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक प्रक्रिया होती है, जिसका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत ज्ञान, अनुभव और अभ्यास के संदर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। यह प्रक्रिया अनिवार्य रूप से कौशल व ज्ञान का कम्प्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है।

ई–लर्निंग के समानार्थक शब्दों के रूप में CBT (कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण), IBT(इंटरनेट आधारित प्रशिक्षण) जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। व्यावहारिक अर्थ में ई–लर्निंग के लिए उच्चस्तरीय इलैक्ट्रॉनिक सूचना एवं संप्रेषण माध्यमों की आवश्यकता होती है– CD-ROM, इंटरनेट सर्फिंग, ई–मेल, टेलीकान्फ्रेसिंग, वेब ब्लॉग आदि।

ब्राण्डेन हॉल ने ई–लर्निंग के अर्थ को बताते हुए कहा है कि "जब अनुदेशन का संचार आंशिक अथवा पूर्ण रूप में विद्युत यंत्रों के माध्यम से किया जाता है तब उसे ई–लर्निंग कहा जाता है।"

ई–लर्निंग की शिक्षण व्यवसाय में प्रासंगिकता

वर्तमान में इंटरनेट समय की एक अति आवश्यक आवश्यकता है। इंटरनेट से शिक्षा जगत को एक नया आयाम मिला है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की अवधारणा के अनुसार सम्पूर्ण भौक्षिक संस्थानों के पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा को भाामिल किया गया है। इंटरनेट द्वारा शिक्षक के मार्ग में आने वाली समय, स्थान और ज्ञान की बाधाओं को काफी सीमा तक समाप्त कर दिया गया है। इंटरनेट द्वारा शिक्षण यानि ई–लर्निंग की वर्तमान में शिक्षण व्यवसाय में अधिक प्रासंगिकता सिद्ध होने लगी है–

- यह शिक्षक के पाठ–प्रस्तुतीकरण को प्रभावशील बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- ई–लर्निंग द्वारा शिक्षक पूर्ण व्यावसायिक प्रक्रिया द्वारा शिक्षण कार्य को उद्देश्य केन्द्रित बनाने में तथा प्रभावी निर्देशन प्रक्रिया में सहायता प्राप्त कर सकता है।

- यह व्यक्तिगत स्तर पर भी शिक्षक को शिक्षण अधिगम संबधी उद्दीपन तथा अनुक्रिया प्रदान करके अपने शिक्षण में गुणात्मक योग्यता का विकास कर सकता है।
- ई–लर्निंग द्वारा शिक्षक को नवीन ज्ञान, तकनीक द्वारा शिक्षण को प्रभावी बनाने के समान अवसर प्रदान करता है।
- ई–लर्निंग द्वारा शिक्षक समय एंव संसाधनों की कमी को दूर करते हुए एक साथ अधिक छात्रों से अन्तःक्रिया कर सकता है। जिससे शिक्षक की व्यावसायिकता में वृद्धि होती है।
- छात्रों तक विषय सामाग्री का ज्ञान पहुँचाने के माध्यमों, पाठ्यक्रमों में यह शिक्षक की अत्यधिक सहायता कर सकता है।
- ई–लर्निंग द्वारा शिक्षक अपनी व्यावसायिक कुशलता को विकसित कर सकता हैं।
- इस तकनीक से शिक्षक अन्र्तराष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली घटनाओं, नवीन तथ्यों का ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थियों को उचित रूप से प्रभावी शिक्षण करा सकता है।
- ई–लर्निंग शिक्षक को अपनी योजना बनाने, अवलोकन करने, मूल्यांकन करने आदि के पर्याप्त अवसर एवं तरीके उपलब्ध कराता है।
- वर्तमान समय में कोरोना महामारी (कोविड–19) के कारण विश्व की शिक्षा व्यवस्था नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है। विद्यालय, महाविद्यालय एंव अन्य भौक्षिक संस्थानों में अवकाश घोषित कर दिया गया है। इस परिस्थिति में ई–लर्निंग शिक्षा का एक प्रभावी साधन बनकर उभरा है। जो शिक्षा व्यवस्था को गति प्रदान कर रहा है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान परिदृश्य में ई–लर्निंग की महती आवश्यकता है। इसके माध्यम से शिक्षक अपने कार्य को व्यावसायिक रूप से दक्षता प्रदान कर सकता है। वर्तमान कोविड–19 के काल में सम्पूर्ण स्थानों पर आवागमन बंद होने के बावजूद ई–लर्निंग से शिक्षा व्यवस्था को गति मिली है। भारत सरकार, राज्य सरकार तथा निजी क्षेत्र में अनेक ई–लर्निंग के एप या कार्यक्रम चला रखे है। जैसे– SWAYAM, E-BASTA, E-PATHSHAALA] XCEED आदि कार्यक्रमों के संचालन द्वारा शिक्षा दी जा रही है। छोटी कक्षाओं के लिए भी ऑनलाइन कक्षाओं की व्यवस्था की गई है जिससे विद्यार्थियों को पढ़ाई में क्षति न हो।

ई–लर्निंग में मोबाइल भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। यह नवीन युग की शिक्षा कही जा सकती है। परन्तु इसे उचित तरीके से नियोजित करने की आवश्यकता है। अधिकांश शिक्षक इसके लिए अप्रशिक्षित है। इसके लिए ऐसे कार्यक्रम, पाठ्यक्रम,एप बनाने होगे जिसमें शिक्षक अपनी प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित कर सके। इससे शिक्षक सदैव नवीन ज्ञान सीखकर प्रभावी अधिगम करा सकता है। क्योंकि अनवरत सीखते रहना शिक्षक की व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि करता है। तथा शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। ई–लर्निंग शिक्षण व्यवसाय में अत्यधिक प्रभावी एवं व्यावसायिक है। इससे शिक्षक में व्यावसायिकता के गुणों का विकास उचित रूप से किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

⇒ शर्मा, आर.ए. (2016) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रियाः आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

⇒ मिश्र, डॉ. आत्मानन्द, गौतम कालीचरण एंव कुमार राकेश (1998), शिक्षा कोषः यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

⇒ कुमार, राजेश (N.D.) सूचना एवं संप्रेषण तकनीकीः राजस्थान राज्य भौक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर, राजस्थान।

⇒ सक्सैना, पराग (2017) नई शिक्षा पद्धतिः अग्रवाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

⇒ डागर, बी.एस. (2015) अन्वेशिका – अध्यापक शिक्षा की भाोध पत्रिकाः एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली।

⇒ सिद्दकी, हिना (2016): Innovations And New Trends In Education: अग्रवाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

⇒ नेहरू, डॉ.आर.एस.एस. (2013): Essentials Of E-Learning: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपारेशन, नई दिल्ली।

⇒ भार्गव, महेश (N.D.) Teacher in 21st Century: राखी प्रकाशन, आगरा।

⇒ http://shodhganga.inflibent-ac.in/simple-search.

⇒ https://hi.m.wikipedia.org>wiki

⇒ http://shodhganga.inflibnet.ac.in>bitstream (chap.33).

❖◆❖